क्षेत्रीय आकांक्षाएँ

इस अध्याय के सभी महत्वपूर्ण प्रश्न – उत्तर सहित। पहले खुद हल करने की कोशिश करो, फिर उत्तर मिलाओ।

अभ्यास प्रश्न-उत्तर (हर टॉपिक से)

» क्षेत्रीय आकांक्षाएँ: अर्थ और चुनौतियाँ

प्रश्न 1 (आसान). क्षेत्रीय आकांक्षाओं का सामान्य अर्थ क्या है?
उत्तर – किसी विशेष क्षेत्र के लोगों की अपनी पहचान, भाषा, संस्कृति या विकास से जुड़ी इच्छाएँ और माँगें।

प्रश्न 2 (आसान). 1980 के दशक में भारत के किन दो राज्यों में क्षेत्रीय आकांक्षाएँ एक बड़ी चुनौती बनकर उभरीं?
उत्तर – पंजाब और असम।

प्रश्न 3 (मध्यम). क्षेत्रीय आकांक्षाएँ किन कारणों से उत्पन्न होती हैं? कोई दो कारण बताओ।
उत्तर – भाषा, संस्कृति, आर्थिक पिछड़ापन, राजनीतिक उपेक्षा या भौगोलिक भिन्नता।

प्रश्न 4 (कठिन). क्या क्षेत्रीय आकांक्षाएँ हमेशा देश की एकता के लिए खतरा होती हैं? स्पष्ट करो।
उत्तर – नहीं, हमेशा नहीं। कई क्षेत्रीय आकांक्षाएँ देश के संघीय ढांचे के भीतर ही अपने क्षेत्र के विकास या पहचान को बढ़ावा देना चाहती हैं। खतरा तब होता है जब ये आकांक्षाएँ अलगाववादी या हिंसक रूप ले लेती हैं।

» भारत सरकार का विविधता और राष्ट्रवाद पर दृष्टिकोण

प्रश्न 5 (आसान). भारत सरकार विविधता को राष्ट्रीय एकता के लिए क्या मानती है? (खतरा/ताकत)
उत्तर – ताकत

प्रश्न 6 (आसान). क्या भारत में क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राजनीतिक अभिव्यक्ति की अनुमति है?
उत्तर – हाँ

प्रश्न 7 (मध्यम). भारतीय राष्ट्रवाद का विविधता पर दृष्टिकोण यूरोपीय देशों से किस प्रकार भिन्न है?
उत्तर – यूरोपीय देश सांस्कृतिक विभिन्नता को राष्ट्र की एकता के लिए खतरा मानते थे, जबकि भारत इसे शक्ति मानता है और लोकतांत्रिक तरीके से अभिव्यक्ति की अनुमति देता है।

प्रश्न 8 (कठिन). लोकतांत्रिक राजनीति क्षेत्रीय आकांक्षाओं को किस प्रकार राष्ट्रीय मुख्यधारा में शामिल करती है? दो मुख्य बिंदु बताएँ।
उत्तर – लोकतांत्रिक राजनीति क्षेत्रीय पहचान, आकांक्षाओं या समस्याओं को आधार बनाकर विभिन्न दलों और समूहों को उनकी भावनाओं की नुमाइंदगी करने का अवसर देती है, और नीति-निर्माण प्रक्रिया में क्षेत्रीय मुद्दों को समुचित ध्यान देती है, जिससे वे राष्ट्रीय स्तर पर सुने और सुलझाए जा सकें।

» क्षेत्रीय आकांक्षाओं से उत्पन्न प्रमुख तनाव के दायरे

प्रश्न 9 (आसान). भारत के किन दो राज्यों में 'अलग राष्ट्र' की माँग को लेकर आंदोलन चले थे?
उत्तर – नागालैंड और मिजोरम।

प्रश्न 10 (आसान). द्रविड़ आंदोलन मुख्यतः भारत के किस भाग से संबंधित था?
उत्तर – दक्षिण भारत, खासकर तमिलनाडु।

प्रश्न 11 (मध्यम). भाषाई आधार पर राज्यों के गठन की मांग से किन दो वर्तमान राज्यों का उदय हुआ?
उत्तर – आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र (इसके अलावा गुजरात भी)।

प्रश्न 12 (कठिन). जम्मू-कश्मीर में तनाव के क्या कारण थे? क्या यह सिर्फ भारत-पाकिस्तान संघर्ष का मामला था?
उत्तर – नहीं, यह सिर्फ भारत-पाकिस्तान संघर्ष का मामला नहीं था। इसमें कश्मीर घाटी के लोगों की अपनी राजनीतिक आकांक्षाएँ, पहचान और स्वायत्तता की मांगें भी शामिल थीं, जो हिंसा और राजनीतिक अस्थिरता का कारण बनीं।

» जम्मू एवं कश्मीर: समस्या की जड़ें और विकास

प्रश्न 13 (आसान). 1947 में जम्मू-कश्मीर का शासक कौन था?
उत्तर – महाराजा हरि सिंह

प्रश्न 14 (आसान). जम्मू-कश्मीर के विलय के समय किस देश ने हमला किया था?
उत्तर – पाकिस्तान

प्रश्न 15 (मध्यम). कश्मीरियत' से आप क्या समझते हैं? यह किस क्षेत्रीय आकांक्षा को दर्शाता है?
उत्तर – 'कश्मीरियत' जम्मू-कश्मीर के लोगों की अपनी एक अलग सांस्कृतिक पहचान की भावना है, जो उन्हें भारतीय या पाकिस्तानी होने से पहले 'कश्मीरी' होने पर जोर देती है। यह एक विशिष्ट क्षेत्रीय आकांक्षा को दर्शाता है।

प्रश्न 16 (कठिन). अनुच्छेद 370 ने जम्मू-कश्मीर को कौन-सी विशेष शक्तियाँ दी थीं, और इसका निरस्तीकरण क्यों महत्वपूर्ण था?
उत्तर – अनुच्छेद 370 ने जम्मू-कश्मीर को अपना अलग संविधान, अपना झंडा और रक्षा, विदेश मामले तथा संचार को छोड़कर बाकी सभी मामलों में कानून बनाने की विशेष शक्ति दी थी। इसके निरस्तीकरण (5 अगस्त 2019) ने जम्मू-कश्मीर की स्वायत्तता को समाप्त कर उसे अन्य राज्यों के बराबर ला दिया, जिससे केंद्र का सीधा नियंत्रण बढ़ा और यह भारत के पूर्ण एकीकरण की दिशा में एक बड़ा कदम था।

» द्रविड़ आंदोलन: क्षेत्रीय गौरव और पहचान की राजनीति

प्रश्न 17 (आसान). द्रविड़ आंदोलन किस राज्य में प्रमुख था?
उत्तर – तमिलनाडु

प्रश्न 18 (आसान). द्रविड़ आंदोलन का मुख्य नेतृत्व किसके हाथ में था?
उत्तर – ई.वी. रामास्वामी नायकर 'पेरियार'

प्रश्न 19 (मध्यम). द्रविड़ आंदोलन के प्रमुख मुद्दे क्या थे?
उत्तर – ब्राह्मणवाद का विरोध, उत्तर भारतीय प्रभुत्व को नकारना, और तमिल संस्कृति तथा क्षेत्रीय गौरव पर जोर।

प्रश्न 20 (कठिन). द्रविड़ आंदोलन ने अपनी मांगों को आगे बढ़ाने के लिए किन तरीकों का इस्तेमाल किया?
उत्तर – सार्वजनिक बहस और चुनावी मंच का इस्तेमाल किया, सशस्त्र संघर्ष का रास्ता नहीं अपनाया।

» पंजाब: आनंदपुर साहिब प्रस्ताव से हिंसा और शांति की ओर

प्रश्न 21 (आसान). अकाली दल ने किस आंदोलन का नेतृत्व किया था?
उत्तर – पंजाबी सूबा आंदोलन

प्रश्न 22 (आसान). ऑपरेशन ब्लू स्टार कब चलाया गया था?
उत्तर – जून 1984 में

प्रश्न 23 (मध्यम). आनंदपुर साहिब प्रस्ताव की मुख्य मांग क्या थी?
उत्तर – पंजाब के लिए अधिक स्वायत्तता और केंद्र-राज्य संबंधों को फिर से परिभाषित करना।

प्रश्न 24 (कठिन). 1984 के सिख विरोधी दंगे क्यों भड़के और इनका पंजाब की राजनीति पर क्या असर हुआ?
उत्तर – ये दंगे प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की उनके सिख अंगरक्षकों द्वारा हत्या के बाद बदले की भावना से भड़के थे। इनका पंजाब की राजनीति पर गहरा नकारात्मक असर पड़ा: सिखों में केंद्र सरकार के प्रति अविश्वास बढ़ा, चरमपंथी समूहों को और बल मिला, अकाली दल बिखर गया, और पंजाब में सामान्य राजनीतिक प्रक्रिया कई सालों तक बाधित रही।

» पूर्वोत्तर भारत: स्वायत्तता, अलगाववाद और 'बाहरी' लोगों का विरोध

प्रश्न 25 (आसान). पूर्वोत्तर के कौन से तीन मुख्य मुद्दे हैं?
उत्तर – स्वायत्तता की माँग, अलगाववाद, और 'बाहरी' लोगों का विरोध।

प्रश्न 26 (आसान). मिजोरम में अलगाववादी आंदोलन का नेतृत्व किसने किया था?
उत्तर – लालडेंगा ने।

प्रश्न 27 (मध्यम). असम में स्वायत्तता की मांगें किन समुदायों द्वारा उठाई गई थीं और उन्हें कैसे संतुष्ट किया गया?
उत्तर – असम में बोडो, करबी और दिमसा जैसे समुदायों ने स्वायत्तता की मांग की थी। करबी और दिमसा को जिला परिषद् के अंतर्गत स्वायत्तता दी गई, जबकि बोडो जनजाति को स्वायत्त परिषद् का दर्जा मिला।

प्रश्न 28 (कठिन). मिजोरम समझौता (1986) किस प्रकार पूर्वोत्तर में क्षेत्रीय आकांक्षाओं के सफल समाधान का एक उदाहरण प्रस्तुत करता है?
उत्तर – मिजोरम समझौता ने संघर्षरत MNF को मुख्यधारा में लाकर, उसे पूर्ण राज्य का दर्जा और विशेष अधिकार देकर, दशकों पुराने अलगाववादी संघर्ष को समाप्त किया। यह दिखाता है कि कैसे बातचीत और समावेशी नीतियां क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राष्ट्रीय एकता में बदल सकती हैं, जैसा कि मिजोरम अब एक शांतिपूर्ण और विकासशील राज्य है।

» मिजोरम और नागालैंड में अलगाववादी आंदोलन

प्रश्न 29 (आसान). मिजो नेशनल फ्रंट (MNF) का नेतृत्व किसने किया था?
उत्तर – लाल्डेंगा ने।

प्रश्न 30 (आसान). मिजोरम शांति समझौता किस वर्ष हुआ था?
उत्तर – 1986 में।

प्रश्न 31 (मध्यम). मिजोरम में अलगाववादी आंदोलन किस घटना के बाद तेज़ हुआ था?
उत्तर – 1959 के अकाल के बाद, जब असम सरकार राहत पहुंचाने में नाकाम रही।

प्रश्न 32 (कठिन). मिजोरम और नागालैंड के अलगाववादी आंदोलनों में मुख्य अंतर क्या था?
उत्तर – मिजोरम में 1986 में पूर्ण शांति समझौता हो गया और उसे पूर्ण राज्य का दर्जा मिला, जबकि नागालैंड में अभी तक सभी विद्रोही गुटों की सहमति से कोई अंतिम समाधान नहीं निकल पाया है।

» असम आंदोलन: सांस्कृतिक पहचान और आर्थिक पिछड़ापन

प्रश्न 33 (आसान). असम आंदोलन कब से कब तक चला?
उत्तर – 1979 से 1985 तक।

प्रश्न 34 (आसान). असम आंदोलन में 'आसू' का पूरा नाम क्या है?
उत्तर – ऑल असम स्टूडेंट्स यूनियन (All Assam Students Union)।

प्रश्न 35 (मध्यम). असम आंदोलन का मुख्य उद्देश्य क्या था?
उत्तर – बांग्लादेश से आए अवैध आप्रवासियों की पहचान कर उन्हें असम से बाहर भेजना और असम के लोगों की सांस्कृतिक पहचान व आर्थिक हितों की रक्षा करना।

प्रश्न 36 (कठिन). असम आंदोलन के परिणामस्वरूप कौन सा समझौता हुआ और इसके मुख्य प्रावधान क्या थे?
उत्तर – असम आंदोलन के परिणामस्वरूप 1985 में 'असम समझौता' हुआ। इसके तहत यह तय किया गया कि बांग्लादेश-युद्ध (1971) के दौरान या उसके बाद असम में आए आप्रवासियों की पहचान की जाएगी और उन्हें वापस भेजा जाएगा।

» क्षेत्रीय आकांक्षाओं से सबक: लोकतंत्र, सत्ता की साझेदारी और आर्थिक संतुलन

प्रश्न 37 (आसान). क्या क्षेत्रीय आकांक्षाएं हमेशा अलगाववाद की ओर ले जाती हैं?
उत्तर – नहीं, अगर उन्हें सही तरीके से संबोधित किया जाए तो वे लोकतंत्र को मजबूत भी कर सकती हैं।

प्रश्न 38 (आसान). सरकार को क्षेत्रीय आंदोलनों से कैसे निपटना चाहिए?
उत्तर – लोकतांत्रिक बातचीत और सुलह के रास्ते से।

प्रश्न 39 (मध्यम). क्षेत्रीय आकांक्षाओं के उदय का एक मुख्य कारण क्या हो सकता है?
उत्तर – आर्थिक असमानताएं या अपनी सांस्कृतिक पहचान को बचाए रखने की इच्छा।

प्रश्न 40 (कठिन). भारत में क्षेत्रीय आकांक्षाओं को संभालने में किन दो प्रमुख सबकों को ध्यान में रखना चाहिए?
उत्तर – पहला, क्षेत्रीय आकांक्षाओं को लोकतांत्रिक राजनीति का अभिन्न अंग मानना; दूसरा, उन्हें दबाने की बजाय लोकतांत्रिक बातचीत अपनाना।

» सिक्किम का भारत में विलय

प्रश्न 41 (आसान). सिक्किम भारत का _____ राज्य बना। (खाली स्थान भरें)
उत्तर – 22वां

प्रश्न 42 (आसान). सिक्किम के राजा को क्या कहते थे?
उत्तर – चोग्याल

प्रश्न 43 (मध्यम). सिक्किम की जनता चोग्याल राजा के शासन से क्यों असंतुष्ट थी?
उत्तर – सिक्किम की आबादी का एक बड़ा हिस्सा नेपाली मूल का था। उन्हें लगता था कि चोग्याल, अल्पसंख्यक लेपचा-भूटिया वर्ग का शासन उन पर थोप रहे हैं। वे लोकतांत्रिक अधिकार और ज़्यादा प्रतिनिधित्व चाहते थे।

प्रश्न 44 (कठिन). सिक्किम का भारत में विलय, लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और क्षेत्रीय आकांक्षाओं का एक सफल उदाहरण कैसे है? समझाएं।
उत्तर – सिक्किम का विलय इसलिए सफल है क्योंकि इसमें जनता की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं का सम्मान किया गया। चोग्याल के प्रशासन से असंतुष्ट जनता ने लोकतांत्रिक चुनावों के ज़रिए सिक्किम कांग्रेस को चुना, जिसने विलय का समर्थन किया। अंततः, 1975 में जनमत-संग्रह (referendum) कराया गया, जिसमें जनता ने स्वयं भारत में विलय पर मुहर लगाई। यह दर्शाता है कि क्षेत्रीय इच्छाओं को दमन के बजाय लोकतांत्रिक तरीके से संबोधित करने पर राष्ट्रीय एकता मजबूत होती है।

» गोवा की मुक्ति और महाराष्ट्र में विलय की बहस

प्रश्न 45 (आसान). भारत ने गोवा को पुर्तगालियों से कब आज़ाद कराया?
उत्तर – 1961

प्रश्न 46 (आसान). गोवा को महाराष्ट्र में विलय करने की मांग किस पार्टी ने की थी?
उत्तर – महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी

प्रश्न 47 (मध्यम). गोवा की जनता ने महाराष्ट्र में विलय के मुद्दे पर जनमत सर्वेक्षण में क्या फैसला किया?
उत्तर – उन्होंने महाराष्ट्र से अलग रहने के पक्ष में वोट किया और अपनी अलग गोवा पहचान बनाए रखने का निर्णय लिया।

प्रश्न 48 (कठिन). गोवा की मुक्ति और उसके बाद महाराष्ट्र में विलय की बहस, भारतीय राजनीति में क्षेत्रीय आकांक्षाओं के किस पहलू को दर्शाती है?
उत्तर – यह भाषाई और सांस्कृतिक पहचान के आधार पर राज्यों की स्वायत्तता और अलग पहचान बनाए रखने की क्षेत्रीय आकांक्षा को दर्शाती है, जहाँ लोग अपनी विशिष्टता को किसी बड़े राज्य में विलीन नहीं करना चाहते।

हल किए हुए उदाहरण (step-by-step)

उदाहरण 1. मान लीजिए, दक्षिण भारत का एक राज्य अपनी प्राचीन भाषा और संस्कृति को लेकर बहुत गर्व महसूस करता है। उन्हें लगता है कि केंद्र सरकार उत्तर भारत की भाषा को ज़्यादा महत्व देती है और उनकी भाषा की उपेक्षा करती है। इस स्थिति में, 'क्षेत्रीय आकांक्षा' क्या होगी?

› सबसे पहले, क्षेत्र की विशिष्ट पहचान देखें: यहाँ, यह दक्षिण भारतीय राज्य की प्राचीन भाषा और संस्कृति है।

› फिर, उनकी 'इच्छा' या 'आकांक्षा' क्या है, यह समझें: वे चाहते हैं कि उनकी भाषा और संस्कृति को राष्ट्रीय स्तर पर उचित सम्मान मिले और उसे संरक्षित किया जाए।

› अब, यह 'चुनौती' कैसे बन सकती है, यह सोचें: अगर इस आकांक्षा को नहीं सुना गया, तो लोग विरोध प्रदर्शन कर सकते हैं, भाषाई पहचान के आधार पर अलग होने की माँग कर सकते हैं, या हिंसक आंदोलन भी शुरू हो सकते हैं।

› निष्कर्ष: इस मामले में, क्षेत्रीय आकांक्षा अपनी भाषा और संस्कृति के लिए सम्मान और संरक्षण की माँग है, और यह तब चुनौती बनती है जब इसे अनसुना किया जाता है या दमन किया जाता है।

उत्तर – क्षेत्रीय आकांक्षा यह होगी कि राज्य की प्राचीन भाषा और संस्कृति को केंद्र सरकार द्वारा पहचाना और सम्मानित किया जाए, साथ ही उसके संरक्षण के लिए नीतियाँ बनाई जाएँ।

उदाहरण 2. भारत सरकार किस प्रकार क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राष्ट्रीय एकता के लिए खतरा न मानकर, उन्हें लोकतांत्रिक प्रक्रिया का हिस्सा बनाती है?

› सबसे पहले, सरकार विविधता को देश की शक्ति मानती है, न कि कमजोरी।

› दूसरा, वह लोकतांत्रिक तरीकों से क्षेत्रीय पहचान और मांगों को राजनीतिक मंच पर उठाने की अनुमति देती है।

› तीसरा, सरकार क्षेत्रीय मुद्दों पर नीति-निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करती है, ताकि उन समस्याओं का समाधान हो सके।

› उदाहरण के लिए, भाषाई आधार पर नए राज्यों का गठन (जैसे आंध्र प्रदेश, गुजरात) इसी दृष्टिकोण का परिणाम था।

उत्तर – भारत सरकार विविधता को राष्ट्रवाद के लिए खतरा नहीं मानती, बल्कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया के तहत क्षेत्रीय आकांक्षाओं को राष्ट्रीय राजनीति में व्यक्त होने का अवसर देकर उन्हें मुख्यधारा में शामिल करती है, जिससे राष्ट्र की एकता मजबूत होती है।

उदाहरण 3. आज़ादी के बाद भारत में क्षेत्रीय आकांक्षाओं से किन प्रमुख क्षेत्रों में तनाव उत्पन्न हुआ? किन्हीं तीन का उदाहरण दें।

› पहला क्षेत्र है जम्मू-कश्मीर। आज़ादी के तुरंत बाद ही इस पर भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्ष शुरू हो गया था, लेकिन इसके साथ ही कश्मीर घाटी के लोगों की अपनी राजनीतिक आकांक्षाएँ भी थीं। अनुच्छेद 370 के तहत विशेष दर्जा मिलने के बावजूद यहाँ हिंसा और आतंकवाद का सामना करना पड़ा।

› दूसरा क्षेत्र पूर्वोत्तर के राज्य हैं, जैसे नागालैंड और मिजोरम। यहाँ भारत से अलग होने की मांग को लेकर ज़ोरदार आंदोलन चले। लोगों की अपनी सांस्कृतिक पहचान और विकास की उपेक्षा की भावना ने इन आंदोलनों को जन्म दिया।

› तीसरा क्षेत्र दक्षिण भारत, विशेषकर तमिलनाडु में द्रविड़ आंदोलन से जुड़ा है। इस आंदोलन से जुड़े कुछ समूहों ने एक समय पर अलग राष्ट्र की बात उठाई थी और हिंदी को राजभाषा बनाने का भी ज़ोरदार विरोध किया था, क्योंकि वे अपनी तमिल पहचान को सुरक्षित रखना चाहते थे।

उत्तर – जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर राज्य (नागालैंड, मिजोरम), और दक्षिण भारत (द्रविड़ आंदोलन) ऐसे प्रमुख क्षेत्र थे जहाँ आज़ादी के बाद क्षेत्रीय आकांक्षाओं से तनाव उत्पन्न हुआ।

उदाहरण 4. जम्मू-कश्मीर भारत में कैसे और कब शामिल हुआ? उस समय क्या परिस्थितियाँ थीं?

› 1947 से पहले जम्मू-कश्मीर एक रियासत थी, जिसके शासक महाराजा हरि सिंह थे।

› महाराजा स्वतंत्र रहना चाहते थे, न भारत में और न पाकिस्तान में मिलना चाहते थे।

› अक्टूबर 1947 में, पाकिस्तान ने कबायली घुसपैठिए भेजकर कश्मीर पर हमला कर दिया।

› महाराजा हरि सिंह ने भारत से मदद मांगी, और इसके बदले उन्होंने भारत के साथ 'विलय पत्र' पर हस्ताक्षर किए।

› इस तरह, जम्मू-कश्मीर 26 अक्टूबर 1947 को औपचारिक रूप से भारत का अभिन्न अंग बन गया।

उत्तर – जम्मू-कश्मीर अक्टूबर 1947 में महाराजा हरि सिंह द्वारा विलय पत्र पर हस्ताक्षर करने के बाद भारत में शामिल हुआ, जब पाकिस्तान ने उस पर हमला कर दिया था।

उदाहरण 5. द्रविड़ आंदोलन के प्रमुख नेता कौन थे और उनका मुख्य उद्देश्य क्या था?

› सबसे पहले हमें आंदोलन के नेतृत्व को पहचानना होगा। पाठ्यपुस्तक में साफ लिखा है कि 'द्रविड़ आंदोलन की बागडोर तमिल समाज सुधारक ई.वी. रामास्वामी नायकर 'पेरियार' के हाथों में थी।'

› इसके बाद, हमें उनके उद्देश्यों पर ध्यान देना है। 'पेरियार' ने ब्राह्मणों के वर्चस्व का विरोध किया और उत्तरी भारत के राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रभुत्व को नकारा।

› उन्होंने विशेष रूप से 'क्षेत्रीय गौरव' और 'तमिल संस्कृति' की प्रतिष्ठा पर जोर दिया।

› आखिरी में, यह आंदोलन एक स्वतंत्र द्रविड़ राष्ट्र की आकांक्षा रखता था, लेकिन इसने कभी सशस्त्र संघर्ष का रास्ता नहीं अपनाया और सार्वजनिक बहस और चुनावी मंच का इस्तेमाल किया।

उत्तर – द्रविड़ आंदोलन के प्रमुख नेता ई.वी. रामास्वामी नायकर, जिन्हें 'पेरियार' के नाम से जाना जाता था। उनका मुख्य उद्देश्य ब्राह्मणवाद और उत्तर भारतीय प्रभुत्व का विरोध करते हुए तमिल क्षेत्रीय गौरव और पहचान को स्थापित करना था।

उदाहरण 6. आनंदपुर साहिब प्रस्ताव के मुख्य उद्देश्य क्या थे और इसने पंजाब की राजनीति को कैसे प्रभावित किया?

› पहला कदम है यह समझना कि आनंदपुर साहिब प्रस्ताव 1973 में अकाली दल द्वारा पारित किया गया था।

› दूसरा, इसके मुख्य उद्देश्य केंद्र-राज्य संबंधों को फिर से परिभाषित करना और पंजाब के लिए अधिक स्वायत्तता की मांग करना था। इसमें सिख 'कौम' (समुदाय) की आकांक्षाओं पर ज़ोर देते हुए सिखों के 'बोलबाला' (प्रभुत्व) का भी जिक्र था, जो संघवाद को मजबूत करने की अपील करता था।

› तीसरा, इस प्रस्ताव ने पंजाब की राजनीति को दो तरह से प्रभावित किया: एक तरफ इसने स्वायत्त सिख पहचान की बहस को और तेज़ किया, जिससे बाद में चरमपंथी तत्वों को बल मिला; दूसरी तरफ, इसकी मांगों को लेकर केंद्र सरकार से बातचीत की शुरुआत हुई, जिससे बाद में राजीव गांधी-लोंगोवाल समझौता हुआ और शांति की दिशा में कदम बढ़े।

उत्तर – आनंदपुर साहिब प्रस्ताव का मुख्य उद्देश्य पंजाब के लिए अधिक स्वायत्तता और केंद्र-राज्य संबंधों को फिर से परिभाषित करना था। इसने पंजाब में सिख पहचान की बहस को बढ़ावा दिया, जिससे बाद में हिंसा और शांति दोनों की राह बनी।

उदाहरण 7. मिजोरम में अलगाववादी आंदोलन कब और क्यों शुरू हुआ? इसका क्या समाधान निकला?

› 1959 में मिजो पर्वतीय इलाके में एक भयानक अकाल पड़ा।

› असम की तत्कालीन सरकार अकाल प्रबंधन में नाकाम रही, जिससे स्थानीय लोगों में गुस्सा बढ़ा।

› लालडेंगा के नेतृत्व में 'मिजो नेशनल फ्रंट' (MNF) बना, जिसने 1966 में अलग देश की मांग करते हुए सशस्त्र अभियान शुरू किया।

› भारत सरकार और MNF के बीच लगभग दो दशक तक संघर्ष चला।

› 1986 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी और लालडेंगा के बीच एक शांति समझौता हुआ।

› समझौते के तहत, मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और MNF ने अलगाववाद छोड़कर मुख्यधारा की राजनीति में प्रवेश किया।

उत्तर – मिजोरम में अलगाववादी आंदोलन 1959 के अकाल और असम सरकार की विफलता के कारण शुरू हुआ, जिसे MNF ने नेतृत्व दिया। इसका समाधान 1986 के राजीव गांधी-लालडेंगा समझौते से निकला, जिसने मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया और शांति बहाल की।

उदाहरण 8. मिजोरम और नागालैंड के अलगाववादी आंदोलनों की तुलना कीजिए और बताइए कि मिजोरम में शांति बहाली कैसे हुई?

› पहला कदम, मिजोरम के आंदोलन को समझें: 1959 में अकाल पड़ा, असम सरकार मदद नहीं कर पाई। इससे गुस्साए मिजो लोगों ने लाल्डेंगा के नेतृत्व में मिजो नेशनल फ्रंट (MNF) बनाया।

› दूसरा कदम, मिजोरम में संघर्ष: MNF ने 1966 में हथियार उठा लिए, 'स्वतंत्रता' की मांग की। भारतीय सेना के साथ करीब 20 साल तक लड़ाई चली, जिसमें दोनों तरफ से बहुत नुकसान हुआ।

› तीसरा कदम, मिजोरम में शांति: जब दोनों पक्षों को लगा कि इससे सिर्फ नुकसान हो रहा है, तो लाल्डेंगा भारत लौटे और राजीव गाँधी सरकार से बातचीत की। 1986 में समझौता हुआ, जिसमें मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला और MNF ने हथियार छोड़ दिए। लाल्डेंगा मुख्यमंत्री बने।

› चौथा कदम, नागालैंड के आंदोलन को समझें: नागालैंड का आंदोलन मिजोरम से भी पुराना है। अंगमी जापू फिज़ो के

नेतृत्व में नागा लोगों ने 1951 में खुद को भारत से 'आज़ाद' घोषित कर दिया था।

› पांचवा कदम, नागालैंड में संघर्ष की स्थिति: नागा लोगों के एक धड़े ने सरकार से समझौता किया भी, लेकिन सभी विद्रोही गुटों ने इसे नहीं माना। इसलिए, नागालैंड की समस्या का पूरा समाधान अभी भी नहीं हो पाया है।

› निष्कर्ष: मिजोरम में दोनों पक्षों की समझदारी और बातचीत से एक निर्णायक शांति समझौता हुआ, जिससे वह आज एक शांतिपूर्ण राज्य है। नागालैंड में, कुछ समझौते होने के बावजूद, सभी पक्षों की सहमति नहीं बन पाई, जिससे संघर्ष अभी भी जारी है।

उत्तर – मिजोरम में लाल्डेंगा और राजीव गाँधी के बीच 1986 के शांति समझौते से आंदोलन खत्म हुआ और मिजोरम को पूर्ण राज्य का दर्जा मिला। नागालैंड में अंगमी जापू फिज़ो के नेतृत्व में 1951 से शुरू हुआ आंदोलन अभी भी पूरी तरह सुलझा नहीं है, क्योंकि सभी विद्रोही गुटों की सहमति नहीं बन पाई है।

उदाहरण 9. असम आंदोलन के मुख्य कारण क्या थे और इसका नेतृत्व किसने किया?

› पहला कारण था सांस्कृतिक पहचान का खतरा। असम के लोगों को यह डर सता रहा था कि बांग्लादेश से अवैध रूप से आए आप्रवासी उनकी जनसंख्या में इतनी बढ़ोतरी कर देंगे कि असमी लोग अपने ही राज्य में अल्पसंख्यक हो जाएँगे। उनकी भाषा, संस्कृति और जीवनशैली पर खतरा मंडरा रहा था।

› दूसरा मुख्य कारण था आर्थिक पिछड़ापन और संसाधनों का असमान वितरण। असम में तेल, चाय, और कोयले जैसे बहुत से प्राकृतिक संसाधन थे, लेकिन स्थानीय लोगों को लगता था कि इन संसाधनों का फायदा बाहरी लोगों को मिल रहा है और असमी जनता गरीब ही रह रही है।

› इस आंदोलन का नेतृत्व 'आसू' (All Assam Students Union) नामक एक छात्र संगठन ने किया। यह संगठन किसी राजनीतिक दल से जुड़ा नहीं था, और इसने पूरे असम में व्यापक जनसमर्थन हासिल किया।

उत्तर – असम आंदोलन के मुख्य कारण सांस्कृतिक पहचान का खतरा (बांग्लादेशी आप्रवासियों का बढ़ता प्रभाव) और आर्थिक पिछड़ापन (संसाधनों के असमान वितरण की भावना) थे। इसका नेतृत्व 'आसू' (All Assam Students Union) नामक छात्र संगठन ने किया।

उदाहरण 10. भारतीय लोकतंत्र में क्षेत्रीय आकांक्षाओं को कैसे संबोधित किया जाना चाहिए?

› सबसे पहले, क्षेत्रीय आकांक्षाओं को लोकतंत्र का एक स्वाभाविक हिस्सा मानना चाहिए, न कि राष्ट्र-विरोधी गतिविधि।

› दूसरा, उन्हें बलपूर्वक दबाने के बजाय, उनके साथ शांतिपूर्ण और लोकतांत्रिक बातचीत करनी चाहिए।

› तीसरा, सत्ता की साझेदारी के माध्यम से इन क्षेत्रों को निर्णय लेने की प्रक्रिया में शामिल करना चाहिए।

› चौथा, क्षेत्रीय आर्थिक असमानताओं को दूर करने के लिए विशेष विकास योजनाएं बनानी चाहिए।

उत्तर – लोकतांत्रिक बातचीत, सत्ता की साझेदारी और आर्थिक संतुलन के माध्यम से क्षेत्रीय आकांक्षाओं को संबोधित करना ही सही तरीका है।

उदाहरण 11. सिक्किम भारत का 22वां राज्य कैसे बना, इसकी प्रक्रिया समझाइए।

› शुरुआत में, सिक्किम भारत की 'शरणागति' में था, जिसका मतलब था कि भारत उसकी रक्षा और विदेश मामले संभालता था, लेकिन अंदरूनी प्रशासन राजा 'चोग्याल' के पास था।

› सिक्किम की आबादी में नेपाली मूल के लोग ज़्यादा थे, जो चोग्याल के प्रशासन से खुश नहीं थे क्योंकि उन्हें लगता था कि चोग्याल अल्पसंख्यक लेपचा-भूटिया वर्ग का शासन उन पर थोप रहे हैं। इन लोगों की लोकतांत्रिक आकांक्षाएं थीं।

› सिक्किम में लोकतांत्रिक आंदोलन तेज़ हुआ और भारत सरकार से मदद मांगी गई।

› 1974 में सिक्किम विधानसभा के चुनाव हुए, जिसमें 'सिक्किम कांग्रेस' को भारी जीत मिली। यह पार्टी सिक्किम को भारत में मिलाने के पक्ष में थी।

› 1975 में सिक्किम विधानसभा ने भारत में पूर्ण विलय का प्रस्ताव पारित किया। इस प्रस्ताव के बाद तुरंत एक 'जनमत-संग्रह' (लोगों की राय जानने के लिए वोटिंग) कराया गया।

› जनमत-संग्रह में सिक्किम की जनता ने भारत में विलय के प्रस्ताव पर अपनी मुहर लगा दी, यानी बहुमत ने हाँ कहा।

› भारत सरकार ने सिक्किम विधानसभा के इस अनुरोध को स्वीकार कर लिया और इस तरह 1975 में सिक्किम भारत का 22वां राज्य बन गया।

उत्तर – सिक्किम, चोग्याल राजा के आंतरिक प्रशासन से जनता की असंतुष्टि, नेपाली आबादी की लोकतांत्रिक आकांक्षाओं और 1975 में हुए जनमत-संग्रह में जनता की सहमति के बाद, भारत का 22वां राज्य बना।

उदाहरण 12. गोवा कब पुर्तगाली शासन से मुक्त हुआ और उसने महाराष्ट्र में विलय का क्या निर्णय लिया?

› पहला कदम: गोवा पर पुर्तगालियों का शासन बहुत पुराना था। भारत के आज़ाद होने के बाद भी पुर्तगालियों ने गोवा छोड़ने से मना कर दिया था।

› दूसरा कदम: 1961 के दिसंबर में, भारत सरकार ने सैन्य कार्रवाई की। भारतीय सेना ने दो दिन के भीतर गोवा को पुर्तगाली शासन से मुक्त करा लिया। इस तरह गोवा, दमन और दीव संघशासित प्रदेश बन गए।

› तीसरा कदम: गोवा के आज़ाद होने के बाद, 'महाराष्ट्रवादी गोमांतक पार्टी' ने मांग की कि गोवा को महाराष्ट्र में मिला दिया जाए क्योंकि ज़्यादातर लोग मराठी बोलते थे।

› चौथा कदम: लेकिन 'यूनाइटेड गोअन पार्टी' और कई गोवा के लोग अपनी अलग गोवा की पहचान, संस्कृति और कोंकणी भाषा को बनाए रखना चाहते थे।

› पांचवां कदम: इस बहस को सुलझाने के लिए, जनवरी 1967 में केंद्र सरकार ने गोवा में एक विशेष 'जनमत सर्वेक्षण' (public opinion poll) कराया। इसमें लोगों से पूछा गया कि वे महाराष्ट्र में शामिल होना चाहते हैं या अलग रहना चाहते हैं।

› छठा कदम: इस सर्वेक्षण में ज़्यादातर लोगों ने महाराष्ट्र से अलग रहने के पक्ष में वोट किया।

› सातवां कदम: अंत में, गोवा एक अलग संघशासित प्रदेश बना रहा और बाद में 1987 में इसे भारत का एक पूर्ण राज्य बना दिया गया।

उत्तर – गोवा 1961 में पुर्तगाली शासन से मुक्त हुआ। 1967 के जनमत सर्वेक्षण में गोवा के लोगों ने महाराष्ट्र में विलय के बजाय अपनी स्वतंत्र पहचान बनाए रखने का निर्णय लिया।

बोर्ड परीक्षा के लिए ख़ास

• क्षेत्रीय आकांक्षाओं के अर्थ और उनके उत्पन्न होने के कारणों को उदाहरणों के साथ समझाना बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है, तो इन पर खास ध्यान देना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं कि भारत का विविधता और राष्ट्रवाद पर क्या दृष्टिकोण है, तो इसे अच्छे से समझकर जाना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं कि किन-किन क्षेत्रों में क्षेत्रीय आकांक्षाओं ने तनाव पैदा किया और सरकार ने उनसे कैसे निपटा। इन क्षेत्रों के नाम और उनके संघर्षों के प्रमुख कारणों को ध्यान से समझना और याद करना।

• यह अवधारणा बोर्ड परीक्षाओं के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अनुच्छेद 370 के प्रावधानों, उसके निरस्तीकरण के कारणों और प्रभावों पर अक्सर सीधे प्रश्न पूछे जाते हैं। 1947 के विलय और पाकिस्तान के साथ संबंधों को भी ध्यान से पढ़ें।

• यह आंदोलन क्षेत्रीय आकांक्षाओं के सबसे महत्वपूर्ण उदाहरणों में से एक है। इसकी शुरुआत, प्रमुख नेता, और तमिलनाडु की राजनीति पर इसके प्रभाव को अच्छे से समझ लेना, बोर्ड परीक्षा में बहुत काम आएगा।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा में अक्सर पूछा जाता है। खास तौर पर 'ऑपरेशन ब्लू स्टार', 1984 के दंगे और राजीव गांधी-लोंगोवाल समझौते के बिंदुओं को विस्तार से याद रखें।

• पूर्वोत्तर भारत के अलग-अलग राज्यों (जैसे मिजोरम और नागालैंड) के आंदोलनों, उनके कारणों और समाधानों पर प्रश्न अक्सर बोर्ड परीक्षा में आते हैं। मिजोरम समझौते की प्रमुख विशेषताओं को अच्छे से याद रखना।

• यह तुलनात्मक अध्ययन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। मिजोरम समझौता एक सफल मॉडल के रूप में और नागालैंड एक लंबित समस्या के रूप में अक्सर पूछा जाता है। दोनों की तुलना और लाल्डेंगा व अंगमी जापू फिज़ो के नाम याद रखना।

• यह विषय बोर्ड परीक्षा के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। अक्सर इस पर सीधे सवाल आते हैं कि भारत ने क्षेत्रीय आकांक्षाओं से क्या सबक सीखे हैं। मुख्य बिंदुओं को याद रखना।

• यह प्रश्न 'क्षेत्रीय आकांक्षाएं' पूरी करने के एक सफल उदाहरण के तौर पर अक्सर पूछा जाता है। सिक्किम के विलय में 'जनमत-संग्रह' की भूमिका को ज़रूर याद रखना।

• गोवा की मुक्ति की तिथि (1961) और जनमत सर्वेक्षण का वर्ष (1967) अक्सर बहुविकल्पीय प्रश्नों में पूछा जाता है। ध्यान रखना, मुक्ति और विलय की बहस, दोनों अलग-अलग चरण हैं।

एक नज़र में रिवीज़न

› क्षेत्रीय आकांक्षाएँ: क्षेत्र की पहचान/विकास की माँगें; 1980s में बड़ी चुनौती।
› भारत: विविधता में एकता का लोकतांत्रिक दृष्टिकोण, क्षेत्रीय आकांक्षाएँ राष्ट्र विरोधी नहीं।
› क्षेत्रीय आकांक्षाओं से जम्मू-कश्मीर, पूर्वोत्तर, द्रविड़, भाषाई राज्यों में तनाव।
› जम्मू-कश्मीर: 1947 विलय, अनुच्छेद 370, आंतरिक-बाहरी संघर्ष, 370 निरस्तीकरण।
› द्रविड़ आंदोलन: तमिलनाडु, पेरियार, तमिल पहचान, ब्राह्मणवाद/उत्तर भारत विरोध.
› पंजाब: 'पंजाबी सूबा' से 'आनंदपुर प्रस्ताव', हिंसा, 1984 दंगे, 'राजीव-लोंगोवाल समझौता'।
› पूर्वोत्तर: स्वायत्तता, अलगाववाद, बाहरी विरोध; मिजोरम समझौता (1986) समाधान का उदाहरण।
› मिजोरम: लाल्डेंगा, 1986 शांति समझौता, पूर्ण राज्य। नागालैंड: फिज़ो, पुराना आंदोलन, समाधान लंबित।
› क्षेत्रीय आकांक्षाएं लोकतंत्र का हिस्सा; बातचीत, साझेदारी, आर्थिक संतुलन से समाधान।
› सिक्किम 1975 में जनमत-संग्रह के बाद भारत का 22वां राज्य बना।
› गोवा: 1961 में पुर्तगालियों से मुक्ति, 1967 जनमत संग्रह (अलग रहने का फैसला), 1987 में राज्य बना।